

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ✆ : ०२० - २४२९५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतिलालजी चोरडिया

: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५३ वे ❖ अंक ५ वा ❖ जानेवारी २०२२ ❖ वीर संवत् २५४८ ❖ विक्रम संवत् २०७८

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● नये वर्ष की आवाज	१५	● हास्य जागृति ५१
● चारित्र से पूजा	१७	● धर्म में भाव प्रधानता ५२
● धनार्जन में बरतें सावधानियाँ	१९	● रस परिवर्तन करें ५३
● कव्हर तपशील	२४	● रंगबिरंगी : १ - रंग ढलती उम्र के ६३
● अंतिम महागाथा :		● जैन शासन के चमकते हिरे ७१
३३ - ध्यान के चरण चेतना की यात्रा	३१	● जागृत विचार ७४
● शान्ति पाओ, सुखी रहो	३६	● संकल्पना नवा - दृष्टिकोन हवा ७५
● सफल होना है तो :		● जीवन चलता रहता है ७६
आओ करें नववर्ष में प्रवेश	३९	● प्रिय कान्हा, कृष्णास ७७
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा : खुद ने देख	४०	● दि पूना मर्चन्ट चेंबर - निवडणूक ७९
● जीवन बोध : बाबाजी की धोती	४३	● आत्मसिध्दी शास्त्र - पुस्तक विमोचन ८०
● स्वाध्याय बनाम श्रेष्ठ जीवन	४४	● सुयर्दत्ता कॉलेज ८२
● आदमी को कितनी जमीन चाहिए	४५	“आकोही पहचान” उपक्रम
● उत्साह	४७	● आंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस ८३
● संघर्ष	४९	● रेडियो प्राईड सिटी स्कॅन सेंटर, पुणे ८५
● कडवे प्रवचन	४९	● कु. कल्याणी बोरा, दीक्षा - वडगाव शेरी ९१

● जयती जैनम् साधना तीर्थ – भिवरी	१२	● जितो संस्थेचा कोविड योद्धा – सन्मान	१९
● श्री. अभयजी भुरट, पुणे – सन्मान	१३	● “ईओलिथ” स्टोन शोरूम, पुणे	१९
● अरिहंत जागृती मंच, पुणे	१५	● चिंतन का अमृत कुंभ	१००
● JATF : Golden Opportunity	१५	● जैन ओसवाल बोर्डिंग, नाशिक	१०३
● आर.एम.डी. फाउंडेशन, पुणे	१६	● डायग्नोपिन कॅम्प शाखा, पुणे	१०५
● जैन श्वे.मू.पू. युवक महासंघ, पुणे	१७	● श्री वीतराग सेवा संघ, पुणे	१०५
● श्री. संकेत मुनोत, पुणे – सन्मान	१७	● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या	

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक रु. २२००

त्रिवार्षिक रु. १३५०

वार्षिक रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

● www.jainjagruti.in

● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतिप्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वतः जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay, M. 9822086997/AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS/SBI Online/ Google Pay/Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA

Branch : Market Yard, Pune 37.

Current A/c No. : 10521020146

IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षित आहेत.

नये वर्ष की आवाज

लेखक : उपाध्याय अमरमुनिजी

नया वर्ष आपके द्वार पर खड़ा है। वह आवाज दे रहा है आपका पिछला जैसा था, वह चला गया। अब आप लौटकर न उसके पास जा सकते हैं। और न वह आपके पास आ सकता है। उसमें अच्छा या बुरा जितना जीवन जीना था, जी लिए। लाख प्रयत्न करें, विगत विगत है, उसमें जीवन का पुनः प्रवेश संभव नहीं है, अतीत को किसी भी मूल्य एवं स्तर पर लौटाया नहीं जा सकता।

विगत को भूल जाइए

अतएव विगत को भूल जाइए। विगत के सुख को भूल जाइए, और भूल जाइए विगत के दुख को भी। सुख को न भूलेंगे, तो वह अब भी आपको अपनी स्मृति दिला कर परेशान करता रहेगा, आसक्ति के जाल में फँसाये रखेगा। और विगत के दुख को न भूलेंगे, तो वह भी अपनी कटु स्मृतियों से आपके मन को कुरेदता रहेगा, भोगी हुई पीड़ा और वेदना के घावों को भरने न देगा, अपितु उन्हें और अधिक चौड़ा और गहरा करता रहेगा। विगत के सुख-दुखों की स्मृतियों से शान्ति नहीं, अधिकतर अशान्ति ही मिलती है। यदि आप मेरे जीवन की अनुकूल विकास यात्रा में यथोचित सही उपयोग करना चाहते हैं, तो मेरे साथ विगत को न जोड़िए। मैं जीवित हूँ, और विगत मृत है, शव है, निष्प्राण है। जीवित के लिए मृत की सहायता कैसे संभव है?

ताजा भोजन पसन्द करेंगे या बासी ?

हाँ! अतीत की अच्छी अनुभूतियों, विचार और आचार की विशिष्टताओं के जो अंश जीवित हैं, सप्राण हैं, अभी तक जिनकी उपयोगिता समाप्त नहीं हुई हैं, उन्हें यदि साथ लेकर चलते हैं, तो मुझे कोई आपत्ति

नहीं है, बल्कि मैं तो आग्रह करूँगा कि अवश्य ही मेरे साथ उनका भी अनुसरण करते रहिए। मुझे नफरत है अनुपयोगिता से, फिर भले वह अनुपयोगिता व्यक्तिगत हो या सामाजिक, धार्मिक हो या कुछ और मैं हर कली के खिले हुए महकते पुष्पों को पसन्द करता हूँ, मुझाए हुए मरणोन्मुख या मृत पुष्पों को नहीं। मैं पूछता हूँ आपसे कि आप ताजा अभी का बना भोजन पसन्द करते हैं, या दस-पाँच दिन का बासी, सड़ा-गला, दुर्गन्ध भरा भोजन पसन्द करते हैं। आपको नये स्वच्छ वस्त्र पसन्द हैं, या फटे-पुराने, मैले जीर्ण-शीर्ण। निवास के हेतु स्वयं के या परिवार के लिए नये उपयोगी भवन अच्छे लगते हैं या जीर्ण-शीर्ण खण्डहर, जिनकी हर ईंट गिरती हुई आपकी और आपके बाल-बच्चों की कपाल क्रिया करने को प्रस्तुत है? स्पष्ट है, आपको इनमें से हर वस्तु नयी और उपयोगी ही पसन्द है, पुरानी और अनुपयोगी नहीं। फिर क्या बात है, आप अतीत के मोह में, परम्परा के दुराग्रह में, तथाकथित सामाजिक तथा धार्मिक आदि के रूप में प्रचारित अनेक अर्थहीन अनुपयोगी मान्यताओं एवं रीति-रिवाजों के मुर्दों को अपने मन मस्तिष्क पर ढोये जा रहे हैं। जितनी भी जल्दी हो सके, आप मुर्दों को जला देते हैं, दफना देते हैं। घर में पड़ा हुआ मुर्दा सड़ता है, साथ ही अनेक जीवितों को भी अपने जैसा मुर्दा बना डालता है। अतः सावधान रहिए, समयोचित साहस कीजिए, अतीत की जो भी मान्यताएँ, परम्पराएँ अपनी उपयोगिता खो बैठी है, उन्हें विसर्जित कर दीजिए। उन्हें बनाये रखने में उनसे चिपटे रहने में, आपका ही नहीं, किसी का भी भला नहीं है। हाँ, यह बात मैं पहले कह चुका हूँ कि जो

अतीत जीवित है, उपयोगी है, उसे अवश्य साथ लेकर चलिए। जो जीवित है, उपयोगी है, वह सही अर्थ में अतीत है भी नहीं। अतीत का अर्थ ही अनुपयोगिता है। **आदि तीर्थंकर ने मानव का जीवन के नया मोड़ दिया**

आदि तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव से पूर्व मानवजाति चिरातिचिर काल से वन्य जीवन यापन करती आ रही थी। वह जीवन सभ्यता की दृष्टि से एक संस्कारहीन, प्रगति शून्य अर्ध-पशु या अर्ध-मानव-सा जीवन था प्रकृति से प्राप्त कन्द-मूल, फल आदि पर ही जीवन-यात्रा चल रही थी। भोग तो था, किन्तु भोग के लिए उत्पादन के रूप में श्रम एवं पुरुषार्थ जैसा कुछ नहीं था। और जब भोग सामग्री का अभाव हुआ, दुष्काल पड़ा तो असहाय मानव प्रजा विनाश के कगार पर पहुँच गई। भगवान् ऋषभदेव ने तब उस अनुपयोगी हुई जीवन पद्धति को ध्वस्त किया, और योग्य कर्म एवं पुरुषार्थ के द्वारा जीवन संरक्षण एवं विकास की समयोचित शिक्षा दी, साथ ही दीक्षा भी। यदि भगवान् समय के परिवर्तन को न पहचानते और पुरातन जीवन चर्या को बदलकर उसे युगानुरूप नया रूप न देते, तो आज धरती पर मानव जाति का कोई चिन्ह न रहता। अनन्तर समय-समय पर अन्य समागत युगनेताओं तथा महापुरुषों ने भी मानवजाति के उत्थान हेतु मानव सभ्यता की धारा को अनेक नये मोड़ दिए हैं। इतिहास को ध्यान में रखिए, मृत अतीत का, मृत परम्पराओं एवं मान्यताओं का, दुराग्रह पर आधारित मोह छोड़िए और जो वर्तमान तथा भविष्य के लिए उपयोगी आदर्श हों, उन्हें अन्तर्विवेक से परिश्रित कर आदर भाव से अपनाइए। पुरातन का संशोधन अपेक्षित है। आँख मूँदकर कुछ नहीं होना चाहिए। 'बुद्धेः फलं तत्त्व विचारणं च' का बोध-सूत्र आपके हर विचार और आचार के परीक्षण की कसौटी है। अतीत का उपयोगी अंश सुरक्षित रखिए, युगानुरूप अपेक्षा हो, तो नयी

परंपराओं एवं मान्यताओं की स्थापना कीजिए। मैं नया वर्ष हूँ, मुझे ताजगी चाहिए। समय की मार से अनुपयोगी हो जानेवाली बासी बातें मुझे कतई पसन्द नहीं है।

आपको पुरातन में नहीं मुझ नये में जीना है -

स्पष्ट है, अब आपको पुरातन में नहीं, मुझ नये में जीना है। नये में ही सोचना है, समझना है, सांस लेना है, चलना है, घूमना है, खड़े होना है, कर्म करना है, और कृत कर्म का फल भोगना है। अतः अपने मन-मस्तिष्क को सृजन-शीलता के पथ पर सक्रिय रखिए। कुछ ऐसा नया सोचिए, जो वर्तमान में से भविष्य की ओर जीवन-यात्रा करती हुई प्रजा के मंगल-कल्याण के लिए हो, किसी एक व्यक्ति का सबसे पृथक अपना कोई वैयक्तिक हित नहीं है। हित ही नहीं, अस्तित्व भी नहीं है। सबके हित में ही सबका हित है, सबके अस्तित्व में ही सबका अस्तित्व है। समष्टि की दृष्टि से ही सोचिए, विचारिए और कर्म कीजिए।

करुणा और प्रेम से अपने मन को रसस्निग्ध बनाइए -

अतीत के अनेक काल खण्डों से मानव कटकर अलग-थलग पड़ गया है। सामुहिक सुख-दुख का, उत्थान-पतन का विचार ही भूल गया है। यही कारण है कि कभी धर्म के नाम पर, तो कभी जाति-वर्ण के नाम पर कभी क्षुद्र क्षेत्रीयता के नाम पर, तो कभी प्रान्तीयता के नाम पर मानव एक-दूसरे से घृणा, विद्वेष करता रहा है, निरपराध स्त्री-पुरुषों का खून तक बहाता रहा है। यह संकीर्ण मनोवृत्ति मेरे यहाँ नहीं चलेगी। खबरदार, लूटपाट, हत्या, अन्धविश्वास, कदाचार, छलकपट, नारी जाति पर क्रूर अत्याचार, बलात्कार जैसे अपकर्मों से मुझे कलंकित किया, तो उसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। इन काले कर्मों से किसी का भी भला नहीं है। अपने मन को उदात्त बनाये रखना, उसे दया, करुणा, प्रेम, सद्भावना पारस्परिक

रचनात्मक सहयोग आदि से रसस्निग्ध बनाए रखना। धरती को नरक बना दिया है तुम लोगों ने, अतीत के कुछ वर्षों में वह नरक अब ध्वस्त करना है और धरती पर स्वर्ग उतारना है। स्वर्ग उतार लाना असंभव या अशक्य नहीं है। अपेक्षा है, प्रामाणिकता के साथ जन-मंगल की दिशा में सत्कर्म करते रहने की जीवन एक यात्रा है। यात्रा में कठिनाइयाँ, विघ्न-बाधाएँ आ

सकती हैं। पर उनसे घबराइए नहीं, थककर बैठिए नहीं। आपका अदम्यधैर्य, सत्साहस, प्रगतिशील चिन्तन और विवेकयुक्त कर्म बना रहा और आपके मन, वाणी और पुरुषार्थ का तेज अपराजित रहा तो, कुछ भी असंभव नहीं है। विघ्न-बाधाएँ शीघ्र ही दूर होंगी, काँटे फूलों में बदलेंगे। जीवन महकेगा, धरती पर स्वर्ग उतरेगा। ●

चारित्र से पूजा

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

* भगवान महावीर ने कहा कि देखो मानव! यदि तुमको मुक्ति का रास्ता तय करना है तो ज्ञान के साथ क्रिया भी करो। क्रिया किये बिना मुक्ति नहीं होगी, लेकिन क्रिया करो ज्ञान के साथ, अर्थात् समझकर करो।

* स्वाध्याय आपको अंधेरे में से लाकर प्रकाश में खड़ा कर देगा, लेकिन प्रकाश में मार्ग तय किया जाएगा स्वयं आपके द्वारा। आगे बढ़ने का वह काम केवल स्वाध्याय से नहीं होगा। उस काम के लिए चारित्र का पालन करना होगा। इसीलिए श्रुतधर्म के पश्चात् चारित्रधर्म बताया गया है।

* भूलना नहीं चाहिए कि जीवन एक अभिन्न-अविच्छेद्य इकाई है, जिसे धार्मिक और लौकिक अथवा पारमार्थिक और व्यावहारिक खण्डों में सर्वथा विभक्त नहीं किया जा सकता। ज्ञानी का व्यवहार परमार्थ के प्रतिकूल नहीं होता और परमार्थ भी व्यवहार का उच्छेदक नहीं होता। अतएव साधक को, चाहे वह गृहत्यागी हो या गृहस्थ हो, अपने जीवन को अखण्ड

तत्त्व मानकर ही जीवन के पहलुओं के उत्कर्ष में तत्पर रहना चाहिए। जैन आचार-विधान का यही निचोड़ है।

* जब तक जीवन में चारित्र नहीं है, जब तक जीवन में संयम नहीं है, जब तक जीवन में आचरण नहीं है, तब तक यह कहना चाहिए कि हमारा वह ज्ञान, हमारी समझ और हमारे भीतर की विशेष प्रकार की जो कला है, वह कला हमारे लिए भारभूत है, बोझ रूप है।

* हमेशा याद रखिए कि आदमी की पूजा ज्ञान से नहीं हुई है, आदमी की पूजा अधिकार और स्थिति से नहीं हुई है, उसकी पूजा उसके रूप और वैभव से नहीं हुई है। उसकी पूजा यदि हुई है तो उसके चारित्र से हुई है। रावण के पास ज्ञान था, ऋद्धि थी, सम्पदा थी, लेकिन उसमें चारित्र नहीं था, इसलिए आज कोई उसका नाम रखने को तैयार नहीं है।

* प्राणी सदा कुछ न कुछ करता रहता है, कभी निष्क्रिय नहीं रहता। किन्तु उसको यह ज्ञान नहीं होता कि कौनसा कर्म करणीय है और कौनसा अकरणीय बहुत बार वह ऐसे कर्म करता है कि अपने आपको उलझा लेता, फंसा लेता है। अतः ज्ञानियों ने कहा- विवेक करो, कुकर्म से सुकर्म की ओर मुड़ जाओ। ●

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वात खात्रीशीर, सर्वात सोपा व सर्वात स्वस्त मार्ग...

जैन जागृति - जाहिराती साठी संपर्क करा.

कच्छर तपशील - जानेवारी २०२२



- ❖ कु. कल्याणी बोरा, दीक्षा - वडगाव शेरी
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ वडगाव शेरी, पुणे येथे ९ डिसेंबर २०२१ रोजी कु. कल्याणी बोरा हीची दीक्षा भव्य महोत्सवात संपन्न झाली. (बातमी पान नं. ९१)
- ❖ जयती जैनम् साधना तीर्थ, भिवरी
जयती जैनम् साधना तीर्थ, भिवरी येथे १६ डिसेंबर २०२१ रोजी नवदक्षीत श्री संयमश्री 'सदिच्छा'जी म.सा. यांची बडी दीक्षा, गुरु माँ मंजुश्री गोशालेचे भूमी शुद्धिकरण व आरोग्य शिबीर भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ९२)
- ❖ जितो पुणे, कोविड योद्धा - सन्मान
पुणे : जैन इंटरनॅशनल ट्रेड ऑर्गनायझेशन (जितो) या संस्थेचा भारताचे गृहमंत्री अमित शहा यांच्या हस्ते कोविड योद्धा सन्मान पत्र देऊन सन्मान करण्यात आला. यावेळी जितोच्या संस्थेच्या वतीने राष्ट्रिय उपाध्यक्ष विजयजी भंडारी, जितो पुणेचे अध्यक्ष ओमप्रकाशजी रांका, जितो पुणेचे सचिव चेतनजी भंडारी, जितो महाराष्ट्र एवं पुणे श्रमण आरोग्यम योजनेचे अध्यक्ष आदेशजी खिंवसरा यांनी हा सन्मान स्वीकारला. (बातमी पान नं. ९९)
- ❖ आत्मसिध्दी शास्त्र - पुस्तक विमोचन, पुणे
“आत्मसिध्दि शास्त्र” हा महान संत व महात्मा

गांधीचे अध्यात्मिक मार्गदर्शक, श्रीमद राजचंद्रजी द्वारा लिखित १४२ छंदांचा आध्यात्मिक ग्रंथ आहे. या ग्रंथाचे पूज्य गुरुदेव श्री. राकेशजी द्वारा इंग्रजी भाषेत भाषांतर करण्यात आले. या ग्रंथाचे विमोचन अनेक शहरात मान्यवरांच्या हस्ते करण्यात आले. पुणे शहरात १६ नोव्हेंबर २०२१ रोजी अनेक मान्यवरांच्या उपस्थित भांडारकर इन्स्टिट्यूट येथे करण्यात आले. (बातमी पान नं. ८०)

- ❖ दि पूना मर्चन्ट चेंबर - निवडणूक
दि पूना मर्चन्ट चेंबरच्या सन २०२१-२०२३ निवडणूकीत प्रोग्रेसिव्ह पॅनलचे ८ तर बाबा पोकर्णा पॅनलचे ७ सदस्य निवडून आले. अध्यक्षपदी श्री. राजेंद्रजी बाठिया यांची निवड झाली. (बातमी पान नं. ७९)
- ❖ डायग्नोपिन, कॅम्प, पुणे ब्रॅच - उद्घाटन
डायग्नोपिन कॅम्प शाखेचे उद्घाटन पुणे शहर पोलिस आयुक्त अमिताभ गुप्ता यांच्या हस्ते करण्यात आले. यावेळी महाराष्ट्र गुन्हे अन्वेषण विभाग प्रमुख रितेशकुमार, पुणे जिल्हा अधीक्षक पंकज देशमुख, पोलीस निरीक्षक अशोक कदम, संचालक श्री. प्रफुल्लजी कोठारी, श्री. मितेशजी कोठारी इ. मान्यवर उपस्थित होते. (बातमी पान नं. १०५)
- ❖ जैन युवक महासंघ, पुणे
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघ - पुणे द्वारे जनसेवेच्या हेतूने मुथा क्लिनिक या दवाखान्याचे उद्घाटन डॉ. महेंद्रजी कावेडिया यांच्या हस्ते करण्यात आले व गेली २१ वर्षे धार्मिक, सामाजिक व मानव सेवेचे सातत्याने कार्य करणारी संस्था म्हणून युवक महासंघच्या नवीन कार्यालयचे उद्घाटन श्रीमती कमलाबाई शंकरलालजी मुथा यांच्या हस्ते ५ डिसेंबर २०२१ रोजी करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९७)

- ❖ **वीतराग सेवा संघ, पुणे – रक्तदान शिबीर**
भवानी पेठ जैन स्थानकांचे नूतनीकरण व नामकरण उद्घाटन ४ डिसेंबर २०२१ रोजी भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. यावेळी वीतराग संघ तर्फे रक्तदान शिबीराचे आयोजन करण्यात आले. या प्रसंगी उपस्थित श्री. विजयकांतजी कोठारी, संघाचे अध्यक्ष श्री. संतोषजी बोरा इ. मान्यवर. (बातमी पान नं. १०५)
- ❖ **ईओलिथ-स्टोन शोरूम, पुणे – उद्घाटन**
डेक्कन जिमखाना पुणे येथे ईओलिथ या अत्याधुनिक स्टोन शोरूमचे उद्घाटन अनेक मान्यवरांच्या हस्ते संपन्न झाले. यावेळी शोरूमचे संचालक श्री. दिपेशजी संचेती, सौ. शामलजी संचेती, श्री. संकेतजी ललवाणी, श्री. सुभाषजी ललवाणी यांनी सर्वांचे स्वागत केले. (बातमी पान नं. ९९)
- ❖ **श्री. अभयजी भुरट, पुणे – सन्मान**
पुणे येथील अभयजी मोतीलालजी भुरट यांचा लोढा ग्रुप, मुंबई यांच्या पुणे येथील एन.आय.बी.एम. रोड वर सुरु असलेल्या सतरा एकर रेसिडेन्शीयल प्रोजेक्ट मध्ये टॉप सेलर म्हणून सन्मान करण्यात आला. लोढा ग्रुपचे महाराष्ट्र हेड श्री. अभीशेष जायसवाल यांच्या हस्ते ट्रॉफी व सन्मान पत्र देण्यात आले. (बातमी पान नं. ९३)
- ❖ **श्री. संकेत मुनोत, पुणे – सन्मान**
स्वातंत्र्याचा ७५ व्या वर्षानिमित्त संविधान दिनी 'संवाद' संस्थेचे अध्यक्ष श्री. सुनीलजी महाजन, श्री. कृष्णकुमारजी गोयल यांच्या हस्ते 'Knowing Gandhi Global Friends' च्या कार्यासाठी गांधीवादी युवा संकेतजी मुनोत यांना पुरस्कार देण्यात आला. (बातमी पान नं. ९७)
- ❖ **रेडियो प्रार्थना सेंटर, पुणे – उद्घाटन**
पुणे येथील डॉ. नरेशजी राका व त्याचे सहकारी

डॉ. सुनीलजी इंगळे, डॉ. रणजीत घाटगे व डॉ. बलदेव राजपूत यांनी लिला चेंबर्स, पुणे सातारा रोड, पुणे येथे रेडियो प्रार्थना सेंटर उभारले. या सेंटरचे उद्घाटन १७ डिसेंबर २०२१ रोजी करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९९) •

झील बन जाओ!

एक बार एक नवयुवक किसी मास्टर के पास पहुँचा। “मास्टर, मैं अपनी जिन्दगी से बहुत परेशान हूँ, कृपया इस परेशानी से निकलने का उपाय बताएं,” युवक ने जिज्ञासा की।

मास्टर बोले, “पानी के ग्लास में एक मुट्ठी नमक डालो और उसे पीयो” युवक ने ऐसा ही किया।

“इसका स्वाद कैसा लगा?” मास्टर ने पूछा।

“बहुत ही खराब, एकदम खारा” युवक थुक्ते हुए बोला। मास्टर मुस्कराते हुए बोले, “एक बार फिर अपने हाथ में एक मुट्ठी नमक ले लो और मेरे पीछे-पीछे आओ। दोनों आगे बढ़ते हुए थोड़ी दूर जाकर स्वच्छ पानी की एक झील के सामने रुक गए। “चलो, अब इस नमक को झील में डाल दो।” मास्टर ने निर्देश दिया। युवक ने ऐसा ही किया। “अब इस झील का पानी पियो” युवक पानी पीने लगा। तब मास्टर ने पूछा,

“बताओ इसका स्वाद कैसा है, क्या यह भी तुम्हें खारा लग रहा है?” नहीं, ये तो मीठा है, बहुत अच्छा है” युवक बोला। मास्टर युवक के बगल में बैठ गए और उसका हाथ थामते हुए बोले, “जीवन के दुख बिल्कुल नमक की तरह हैं। न इससे कम ना ज्यादा। जीवन में दुख की मात्रा वही रहती है, बिल्कुल वही। लेकिन हम कितने दुख का स्वाद लेते हैं ये इस पर निर्भर करता है कि हम उसे किस पात्र में डाल रहे हैं, इसलिए जब तुम दुखी हो तो सिर्फ इतना कर सकते हो कि खुद को बड़ा कर लो गिलास मत बने रहो झील बन जाओ।” •